फरवरी २०१४

दादा भगवान परिवार का

क़ीमत ₹ १२/-

अक्रम एक्सप्रेस

प्रामाणिकता

अक्रम एक्सप्रेस

प्रामाणिकता

संपादकीय

बालमित्रों,

सामान्य शब्दों में कहें तो प्रामाणिकता मतलब किसी को भी नहीं ठगना। दूसरों को ठगने से हमें बहुत बड़ा नुकसान होता है। इस गुनाह का बहुत बड़ा दंड आता है।

प्रामाणिकता, यह सबसे बड़ा धर्म है। जितने भी महान पुरुष हुए हैं, उनमें अधिकतर यह गुण था ही।

तो आओ, इस अंक में प्रामाणिकता का मतलब क्या है, यह गुण कैसे प्राप्त कर सकते हैं, अप्रामाणिकता से कैसे छूटें, आदि की विशेष समझ परम पूज्य दादाश्री से प्राप्त करें और अप्रामाणिकता के गुनाह से छूटें।

- डिम्पल महेता

दादाजी कहते हैं... ३
यह तो नई ही बात! ४
अपने आपको परखकर देखो! १५
ऐतिहासिक गौरवगाथा १५
बीज ६
वीडियो रिकॉर्डिंग ९
महात्मा गाँधीजी की प्रामाणिकता १३
चलो खेलें...१८
GNC Day की झलक २०
अक्रम एक्सप्रेस फरवरी २०१४ २

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक: ११
अखंड क्रमांक: ११
फरवरी २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर -
३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

दादाश्री : प्रामाणिकता का मतलब किसी का कुछ भी अणहक्क का(दूसरे के हक्क का) अपने घर में नहीं आए, इस तरह रहना चाहिए। अपने हक्क का, सहज में जो मिल जाए, वह सब भोगने की छूट है, उसमें किसी के साथ धोखाधड़ी न करते, चोरी न करते। कोई मुझसे कहे, "मुझे सुख चाहिए।" तो उसे मैं कहूँगा, "प्रामाणिकता से रहना, नीति का पालन करना।" तुम यदि दूसरे को देते हो तो वह देव धर्म है। लेकिन दूसरे का, अणहक्क का नहीं लेते तो वह मावनधर्म है। यानी कि प्रामाणिकता, सबसे बड़ा धर्म है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी बात सही है। लेकिन कोई झोपड़ी में रहता हो, भूखा-प्यासा हो। उसके सामने महल में कोई रहता हो। झोपड़ीवाला उसे देखकर सोचता है कि मैं इतना अधिक प्रामाणिक हूँ, फिर भी मेरी दशा कैसी है। और यह व्यक्ति इतना उल्टा करता है फिर भी वह महल में रहता है।

दादाश्री : अभी यह(झोपड़ीवाला) जो दुःख भुगत रहा है। वह उसने पहले जो परीक्षा दी थी, उसका यह परिणाम है और उस व्यक्ति ने भी जो परीक्षा दी थी, उसका यह परिणाम आया है। वह (महलवाला) पहले पास हुआ है और अब फेल होने के लक्षण हैं। (मतलब पहले अच्छे कर्म किए थे इसलिए अभी सुख भोग रहा है लेकिन अब उल्टे-सीधे काम कर रहा है। इससे अगले जन्म में दुखी होगा।) और इसके पास होने के लक्षण हैं। जहाँ कोई व्यक्ति प्रामाणिकता से जीवन जीता है, तो वहाँ चौबीस तीर्थंकरों का वास होता है। प्रामाणिकता भगवान का बहुत बड़ा "लाइसेन्स" है। उसका कोई नाम नहीं देता। प्रामाणिकता, नैतिकता, ओब्लाइज़िंग नेचर हो तो उसके सभी दुर्गुण धुल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऑनेस्ट (प्रामाणिक) नहीं हो पाते तो उसका उपाय क्या है?

दादश्री : अगर डिसऑनेस्ट(अप्रामाणिक) हो जाए तो उसका प्रतिक्रमण करना। तुम्हारा अगला जन्म अच्छा हो जाएगा। डिसऑनेस्टी का पश्चाताप करना। पश्चाताप करनेवाला आदमी ऑनेस्ट है, यह निश्चित है। अप्रामाणिकता करनी पड़े तो जिन भगवान को मानते हो, उनके पास सच्चे हृदय से बहुत पश्चाताप करना कि इस भूल के लिए माफी माँगता हूँ। ऐसी भूल नहीं करने की शक्ति दीजिए। तो अनीति-अप्रामाणिकता के गुनाह के ज़ोखिमदारी से छूट जाओगे।

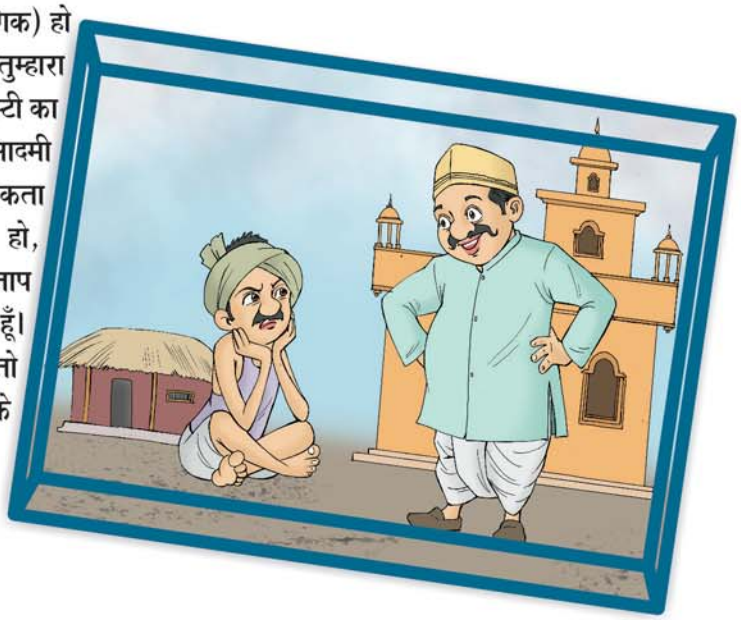

यदि कोई व्यक्ति भगवान को नहीं माने, किसी धर्म का पालन नहीं करे और फिर भी प्रामाणिक रहे, नीति से रहे। तो वही सबसे बड़ा धर्म है। वह भगवान की आज्ञा में ही है और उसे उसका फल मिलता ही है।

यह तो नई

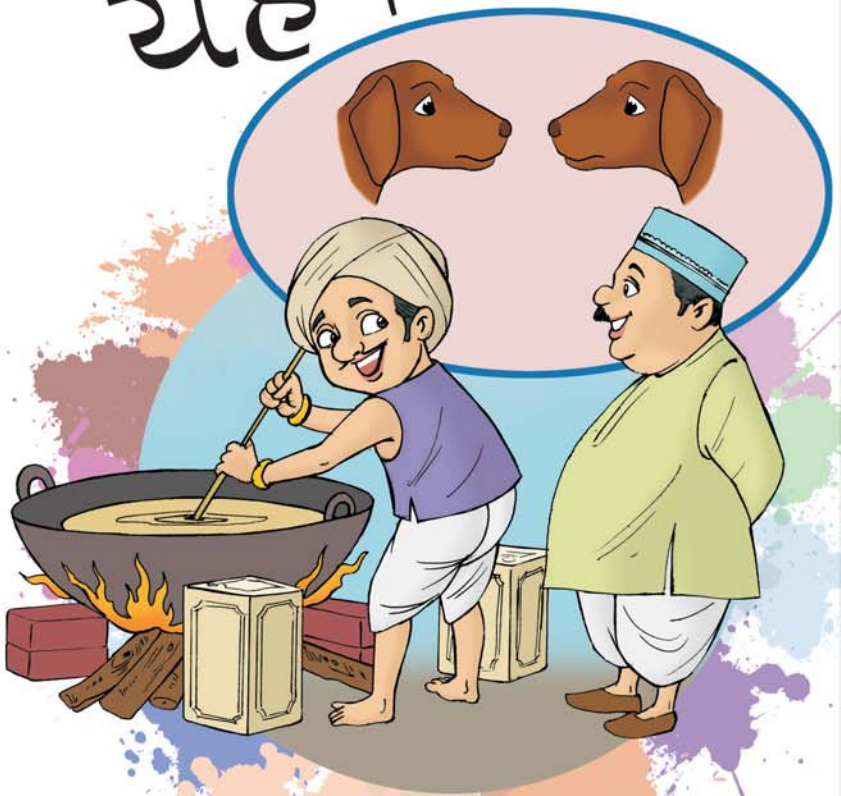

प्रामाणिकता से मनुष्य फिर से मनुष्य जन्म में आ सकता है और जो लोग मिलावट करते हैं, अणहक्क का छीन लेते हैं, अणहक्क का भोग लेते हैं, वे सभी यहाँ से दो पैर में से चार पैर में (जानवर में) जाते हैं और ऊपर से पूँछ भी मिलती है।

जिसमें प्रामाणिकता हो, उसे भय थोड़ा कम लगता है, भय रहता ही नहीं उसे!

ही बात?

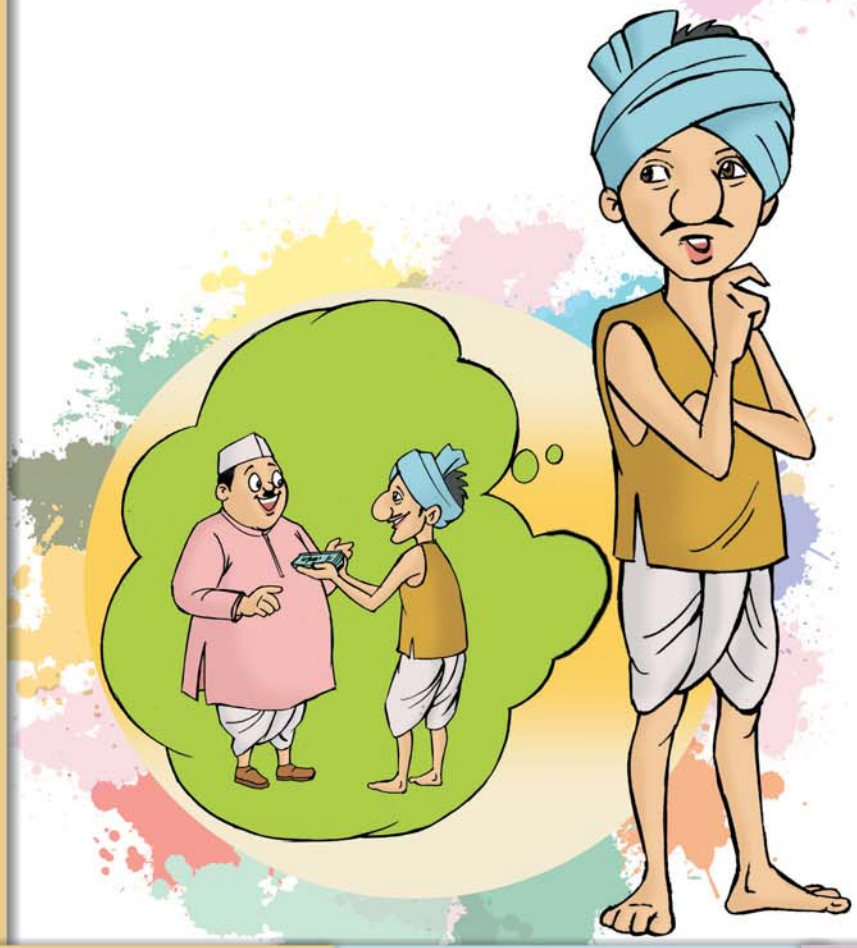

अगर किसी के रुपए लिए हों तो अपना भाव अच्छा रखना चाहिए। “आज रुपए होते तो आज ही दे देता”, इसे साफ भाव कहते हैं। भाव में तो ऐसा ही रहना चाहिए कि कब जल्दी से जल्दी वापिस दे दूँ।

बीज

राजा विश्वप्रतापसिंह ने बहुत ही सफलतापूर्वक, वर्षों तक उज्जैन पर राज्य किया था। उज्जैन की प्रजा भी सुखी और समृद्ध थी और राजा विश्वप्रताप से बहुत संतुष्ट थी। लेकिन अब, विश्वप्रताप की उम्र हो गई थी। उन्हें कोई कुंवर नहीं था। उन्हें लगा कि अब वे बहुत नहीं जी पाएँगे, इसलिए एक कुशल और समर्थ युवक को राजगद्दी सौंप देनी चाहिए। लेकिन राजगद्दी सौंपे किसे? यह प्रश्न विश्वप्रताप को बहुत सताता था। अंत में उन्होंने इसका जवाब खोजने के लिए एक युक्ति की।

एक दिन उन्होंने राज्य के सभी युवकों को राजदरबार में इकट्ठा करके कहा, "अब समय आ गया है कि मैं अपने उत्तराधिकारी का चुनाव करूँ। जो मेरी परीक्षा में खरा उतरेगा, वह इस राज्य का राजा बनेगा।"

राजा की ऐसी घोषणा से सभी युवक एक दूसरे की ओर देखने लगे। साथ ही साथ सबके हृदय में राजगद्दी प्राप्त करने की तमन्ना भी जाग उठी। सभी परीक्षा के लिए तैयार हो गए।

सेवकों ने राजा के पास एक थैला रखा। सभी युवक आश्चर्यचकित होकर चर्चा करने लगे कि इसमें क्या होगा। आखिर में राजा ने कहा, "आज मैं आप सभी को एक-एक बीज दूँगा। आप वह बीज बोना, और उसे रोज़ पानी देना। और छः महीने बाद, इस बीज में से जो कुछ भी उगा हो, वह मेरे पास ले आना। उसके बाद मैं अपना निर्णय दूँगा।"

एक के बाद एक सभी युवक राजा से बीज लेकर घर गए। इन सब युवकों में कर्ण भी था। उसने भी उत्साह से राजा से बीज लिया और घर जाकर बो दिया। वह रोज़ ध्यान से उसमें पानी डालता। समय बीतने लगा। कर्ण रोज़ देखता कि बीज उगा या नहीं।

लगभग तीन हफ्ते बीत गए। राज्य में दूसरे सभी युवक अपने-अपने पौधों की बातें करने लगे। कर्ण रोज़ बीज को पानी देता था। लेकिन कुछ नहीं उग रहा था। समय बीतने लगा। चार हफ्ते बीत गए, पाँच, छः, सात, आठ..... लेकिन अभी तक उसके बीज में से एक अंकुर तक नहीं फूटा था।

कर्ण के मित्रों के पौधे लंबे-लंबे हो गए थे, लेकिन कर्ण के पास कुछ भी नहीं था। वह तो रोज़ अपने पौधे उगने की राह देख रहा था। ऐसा करते-करते छः महीने बीत गए। राजा को पौधे दिखाने का दिन आ

गया।

उस दिन महल में खूब चहल पहल थी। और क्यों न हो...? आज भावी राजा का चुनाव होनेवाला था। कर्ण महल में दाखिल हुआ। दूसरे सभी युवकों के पौधे देखकर, वह एकदम दंग रह गया। किसी का अच्छा सा गुलाब का पौधा था तो किसी का जास्मीन का। रंग-बिरंगे फूलों और उसकी सुगंध से पूरा दरबार महक उठा था। कर्ण ने अपना खाली पात्र जमीन पर रखा। यह देखकर बहुत से युवक उस पर हँसने लगे। कुछ को कर्ण पर दया आई।

तभी राजा ने दरबार में प्रवेश किया। सभी युवकों का अभिवादन करके वे सिंहासन पर बिराजे। विविध पौधों पर दृष्टि पड़ते ही बोले, "वाह! कितने सुंदर फूल उग आए हैं! कहना पड़ेगा! आज आप में से कोई एक इस राज्य का राजा चुना जाएगा।"

ऐसा कहकर राजा सभी पौधों का निरीक्षण करने के लिए सभा में घूमने लगे। अचानक, उनकी नज़र

कर्ण पर पड़ी। वह एक कौने में गुमसुम होकर अपने खाली पात्र के साथ खड़ा था। सभी पौधे देखने के बाद राजा अपनी राजगद्दी पर जाकर बैठ गए।

एक सिपाही को बुलाकर, उन्होंने कर्ण के सामने इशारा करके कहा, "उस युवक को यहाँ ले आओ।"

सभी युवकों के बीच में खुसर पुसर शुरू हो गई। किसी को कर्ण पर दया आई, "बेचारा कर्ण, अब राजा इसे सज़ा देंगे।" तो कोई कहने लगा, "बेवकूफ ही है न! एक पौधा उगाना भी नहीं आया।"

कर्ण राजा के पास आया। राजा ने उससे उसका नाम पूछा। फिर सभी को शांत करते हुए बोले, "प्रजाजनों, तुम्हारे नए राजा हैं, कर्णसिंह। आप सभी इनका अभिनंदन कीजिए।"

यह सुनकर कर्ण दंग रह गया। वह तो पौधा भी नहीं उगा सका था, फिर भी उसे राजा बनाने के लिए कैसे पसंद किया जा सकता है?

राजा की घोषणा सुनकर दरबार में हल्का कोलाहल शुरू हो गया। सब को शांत करते हुए राजा बोले, "छः महीने पहले मैंने आप सभी को एक बीज दिया था और कहा था कि इस बीज में खाद-पानी देना और छः महीने बाद इसमें से जो उगे उसे मेरे पास लेकर आना लेकिन वे सभी बीज सेके हुए थे। जो उग नहीं सकते थे।"

यह सुनकर सभी स्तब्ध रह गए।

राजा आगे बोले, "कर्ण के अलावा बाकी सब मेरे पास ऐसे सुंदर पौधे लेकर आए हो। जब आप सबको पता चला कि आपको दिया गया बीज नहीं उग रहा है, तब आप लोगों ने वह बीज बदल दिया। सिर्फ कर्ण के पास ही उसके दिए गए बीज को लाने की हिम्मत और प्रामाणिकता थी। कर्ण मेरी परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ है और उसने मेरा विश्वास जीत लिया है। और मुझे संतोष है कि प्रजा को एक प्रामाणिक और विश्वासपात्र राजा मिलेगा।"

सभी युवकों के सिर शर्म से झुक गए। राजा ने बहुत ही नरम होकर युवकों से पूछा, "आप सबसे एक प्रश्न पूछूँ? यदि आपके साथ कोई चालाकी करे और आपको ठगे तो आपको अच्छा लगेगा? क्या आपको यह अच्छा लगेगा कि आपका राजा ही आपको ठगे?"

सभी युवकों ने सिर हिलाकर "ना" कहा।

फिर राजा बोले, "यदि, आपको ठगना अच्छा नहीं लगता तो आप कैसे दूसरे को ठगने का सोच सकते हैं? ठगना और अप्रामाणिकता यह सबसे बड़ी मूर्खता है। आप यदि अप्रामाणिक रहोगे तो आपको कोई फायदा तो नहीं होगा लेकिन भयंकर नुकसान ज़रूर होगा। प्रामाणिकता सबसे बड़ा धर्म है। देखा न, एक सेके हुए बीज में भी प्रामाणिकता बोओगे, तो विश्वास उगेगा।"

सभी युवकों ने राजा की बात को दिल से स्वीकार किया। सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ नए राजा का स्वीकार किया।

वीडियो रिकॉर्डिंग

क्लास में इतनी ज्यादा शिष्टता और शांति कभी नहीं रहती थी। लेकिन आज तो क्लास के सबसे शैतान बच्चे भी पढ़ाई कर रहे थे। कारण??

कारण यह था, कि क्लास रूम में मिसेज़ रॉय अपने वीडियो कैमरे के साथ खड़ी थीं। मिसेज़ रॉय स्कूल पर एक वीडियो फिल्म बना रही थीं, जो एन्युअल फंक्शन में प्रिन्सिपल साहब और सभी अभिभावक देखने वाले थे।

क्लास खत्म होते ही...

मेडम, आज क्लास में डिसिप्लिन देखकर आपको ऐसा ही लगा होगा न कि मिसेज़ रॉय रोज़ अपना वीडियो कैमरा लेकर हमारी क्लास की फिल्म उतारने आएँ तो कितना अच्छा!

निगम को लगा कि उषा टीचर उसके जोक पर हँसेंगी। लेकिन वे एकदम गंभीर हो गईं।

निगम, हम लोग हमेशा कैमरे के सामने ही होते हैं। बस, इतना ही है कि वह कैमरा गुप्त रहता है।

सचमुच? क्लास में गुप्त वीडियो मॉनीटर है?

क्लास में नहीं, अपने भीतर।

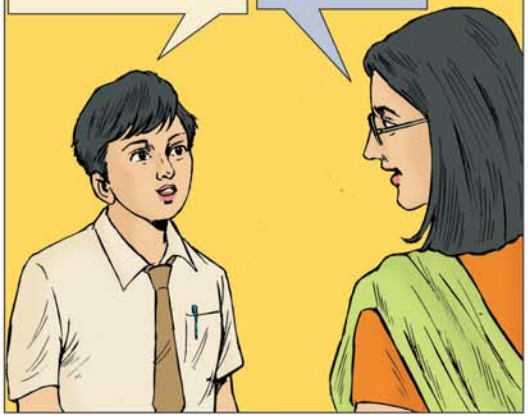

हम जब भी कुछ गलत करते हैं, तब अपने भीतर बैठे हुए भगवान कैमरे की तरह सबकुछ रिकॉर्ड करते रहते हैं। लोगों को यदि यह समझ में आ जाए, तो वे गलत काम करने से रुक जाएँ।

लेकिन मेडम की बात में निगम को रुचि ही कहाँ थी? मन में तो दूसरी ही धुन सवार थी।
आज घर पर मामाजी, मामीजी, मौसाजी, मौसीजी और पर्व आनेवाले थे। आज पर्व के साथ चेस खेलनेवाला हूँ। हर बार की तरह आज भी उसे हरा दूँगा।

दोपहर को खाना खाकर सभी बातों में लग गए। निगम के रूम में जाकर पर्व और निगम चेस खेलने लगे।

थोड़ी देर बाद,
चेक
निगम को पसीना आ गया। पहली बार वह हार रहा था।

एक मिनट, मैं अपने लिए थोड़ा नाश्ता ले आता हूँ।

पर्व के जाने के बाद, निगम ने रूम में नज़र घुमाई। वहाँ कोई नहीं था।

क्या करूँ? गेम थोड़ा अदलाबदली कर दूँ? पर्व को पता ही नहीं चलेगा। नहीं तो हारना पड़ेगा। यह कितना शर्मनाक होगा!

थोड़ी देर बाद, मामाजी : पर्व, निगम, बच्चा पार्टी, सभी बाहर आ जाओ। आप सभी के लिए एक सरप्राइज़ है।

मामाजी ने सबको टी.वी. के आगे बैठ जाने के लिए कहा।

यादगार रहे इसलिए मैंने अपने वीडियो कैमरे में, हम सब के साथ में बिताए सुंदर पल आज रिकॉर्ड कर लिए हैं। नैचुरल रिकॉर्डिंग हो, इसलिए मैंने किसी को बताया नहीं था.

मामाजी ने टी.वी. शुरू किया। देखते-देखते मामाजी कमेन्टरी करते गए। थोड़ी देर बाद....

और यह है अपना मास्टर चेस प्लेयर पर्व मेहता, जो अभी पेट पूजा में बिज़ी है।

और फिर दृश्य आया निगम का। यह तो वही पल था, जब निगम चीटिंग करके गेम अदलाबदली कर देने की सोच रहा था। निगम के हृदय की धड़कन बढ़ गई।

और यह है अपना दूसरा ग्रान्ड मास्टर निगम शाह, जो अभी गंभीरता से कुछ सोच रहा है।

थैंक्स गॉड, मैंने चीटिंग नहीं की। नहीं तो पूरे परिवार के सामने मेरी कैसी फज़ीहत हुई होती। चीटिंग करके मैं जीतकर भी हार गया होता।
मामाजी, मुझे भी इस वीडियो की एक कॉपी देना।
हाँ, हाँ, उसे ज़रूर देना। आज पहली बार चेस में यह मेरे सामने हार गया है। इसलिए रिप्ले देखकर यह फिर से प्रैक्टिस करेगा। सही बात है न निगम?
आज तो मैं हारकर भी जीत गया हूँ। आज से मैं तय करता हूँ कि चेस में या ज़िंदगी में ऐसी कोई चीटिंग नहीं करूँगा, जिसका रिप्ले देखने में मुझे ज़रा भी घबराहट हो।
हाँ, बिल्कुल सही बात है।

महात्मा गाँधीजी की प्रामाणिकता

सत्य बोलना भी एक प्रामाणिकता ही है। जिनका जीवन ही एक संदेश था, ऐसे बापू के जीवन से सभी परिचित हैं, बालमित्रों, आज हम बापू के ही शब्दों में, उनके द्वारा लिखी हुई उनकी आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" पुस्तक से यह बात जानेंगे।

"मेरे चाचाजी को बीड़ी पीने की आदत थी। उन्हें धुँआँ निकालते हुए देखकर मुझे और मेरे एक भाई को भी बीड़ी फूँकने की इच्छा हुई। पैसे तो हमारे पास नहीं होते थे, इसलिए चाचाजी बीड़ी के जो ठूँठे फेंक देते थे, उन ठूँठों की चोरी करना हमने शुरू किया।"

लेकिन कहीं हर बार ठूँठ नहीं मिलते थे और उनमें से बहुत धुँआँ भी नहीं निकलता। इसलिए नौकर की गाँठ में से दो-चार पैसे की चोरी करके बीड़ी खरीदते। लेकिन उन्हें रखें कहाँ? यह सवाल आया। यह मालूम था कि बड़ों के सामने तो बीड़ी नहीं पी सकते। जैसे-तैसे करके थोड़े हफ्ते चलाया। उसी समय मैंने सुना कि एक तरह का पेड़ (उसका नाम तो भूल गया हूँ) होता है, जिसकी डाली बीड़ी की तरह ही जलती है और उसे पी सकते हैं। हम उसे लेकर पीने लगे!

लेकिन हमें संतोष नहीं हुआ। हमारी पराधीनता हमें खलने लगी। अंतः हम दोनों ने झूठी बीड़ी चुराकर पीना, साथ ही नौकर के पैसे चुराकर उसमें से बीड़ी लेकर फूँकने की आदत छोड़ दी।

बीड़ी पीने से तो बीडियों के ठूँठा चुराना और उसके लिए नौकर के पैसे चुराने के दोष को मैं अधिक गंभीर समझता हूँ। उसके अतिरिक्त मुझसे दूसरा भी एक चोरी का दोष हुआ। जब बीड़ी पीने का दोष हुआ, तब मेरी उम्र बारह-तेरह साल की होगी, शायद उससे भी कम।

और इस चोरी के समय उम्र पंद्रह साल की होगी। यह चोरी मेरे भाई के सोने के कड़े के टुकड़े की थी। उन्होंने छोटा-सा, मतलब करीब पच्चीस रुपए का कर्ज लिया था। उसे कैसे चुकाएँ, उसके बारे में हम दोनों भाई सोच रहे थे। मेरे भाई के हाथ में सोने का कड़ा था। उसमें से एक तोला सोना काटना मुश्किल नहीं था। कड़ा काटकर, उतना सोना बेचा और कर्ज पूरा किया।

लेकिन मेरे लिए, यह बात असह्य हो गई। अब मैंने चोरी नहीं करने का निश्चय किया। पिताजी के सामने कबूल भी कर लेना चाहिए, ऐसा लगा। जीभ तो नहीं उठी। पिताजी मुझे मारेंगे, ऐसा डर नहीं था। लेकिन वह दुखी होंगे, शायद माथा कूटेंगे तो? ऐसा विचार आया। लेकिन यह खतरा उठाकर भी दोष तो कबूल करना ही चाहिए, उसके बिना शुद्धि नहीं होगी, ऐसा लगा।

अंत में मैंने चिट्ठी लिखकर दोष कबूल करने और माफी माँगने का निश्चय किया। मैंने चिट्ठी लिखकर पिताजी के हाथों में दी। चिट्ठी में सारा दोष कबूल किया और सज़ा माँगी। वह खुद दुखी नहीं हों, ऐसी विनती की और भविष्य में कभी ऐसा दोष नहीं करने की प्रतिज्ञा ली।

मैंने काँपते हुए हाथों से यह चिट्ठी पिताजी के हाथ में रखी। मैं उनके पलंग के सामने बैठा। उस समय वह बीमार थे। उन्होंने चिट्ठी पढ़ी। आँखों से आँसू टपके। चिट्ठी भीग गई। उन्होंने थोड़ी देर आँख मींची और फिर चिट्ठी फाड़ दी। चिट्ठी पढ़ने के लिए बैठे थे और फिर लेट गए।

मैं भी रोया। पिताजी का दुःख समझ सकता था। उन आँसू के प्रेमबाण ने मुझे बेधा। उस प्रेम को तो, वही जान सकता है जिसने अनुभव किया हो।

मैंने ऐसा सोचा था कि पिताजी क्रोध करेंगे, कटु वचन सुनाएँगे, शायद सिर पीटेंगे। लेकिन उन्होंने कितनी शांति रखी। ऐसा मैं मानता हूँ कि उसका कारण था दोष का निखालस इकरार। मेरे इकरार करने से पिताजी मेरी तरफ से निर्भय हो गए और मेरे प्रति उनका लगाव बहुत बढ़ गया।

देखा बालमित्रों, गांधीजी ने अपने द्वारा हुई अप्रामाणिकता का कैसा पश्चाताप किया, पिताजी के सामने अपना दोष कबूल किया और फिर कभी भी, यह दोष नहीं करने का निश्चय किया। और अंत तक उन्होंने उस निश्चय का पालन किया।

तो आओ, हम भी तय करें कि आज से पहले अगर कभी भी हम अप्रामाणिक हुए हों तो उसका दिल से प्रतिक्रमण कर लेंगे। अब, फिर कभी अप्रामाणिक नहीं होंगे, ऐसा स्ट्रोंग निश्चय करें और उसके लिए परम पूज्य दादा भगवान से खूब शक्तियाँ माँगें।

टॉपिक एक्टिविटी

नीचे अप्रामाणिकता के दृष्टांत दिए गए हैं। इस अंक से मिली हुई समझ के अनुसार, प्रत्येक दृष्टांत में प्रामाणिकता किस तरह रख सकते हैं, यह बताइए।

प्रामाणिकता किस तरह रखें?

दृष्टांत नंबर १.

जय को रोज़ आइस्क्रीम खाने का मन होता था। इसलिए जब मौका मिलता, तब वह छुपकर बड़े भाई के वॉलेट से पच्चीस-पचास रुपए निकाल लेता, और अपना शौक पूरा कर लेता।

दृष्टांत नंबर २.

रोड पर समीर और उसके मित्र क्रिकेट खेल रहे थे। समीर ने ऐसा ज़ोरदार शॉट मारा कि रमेश चाचाजी की खिड़की का काँच टूट गया। चाचाजी को पता चले उससे पहले ही पूरी टोली वहाँ से भाग गई।

दृष्टांत नंबर ३.

अंजली की स्कूल में हर शुक्रवार को कैन्टीन में नाश्ते के साथ पेप्सी का कप मिलता। नियम अनुसार, उस कप में एक ही बार पेप्सी ले सकते थे। लेकिन अंजली और उसकी फ्रेन्ड्स कैन्टीनवाले की आँख बचाकर तीन-चार बार पेप्सी ले लेतीं।

दृष्टांत नंबर ४.

खरीदारी के समय, गलती से दुकानदार ने अंशु को ज्यादा पैसे वापस दे दिए। अंशु को पता चला कि दुकानदार ने ज्यादा पैसे वापस दिए हैं। लेकिन कुछ भी बोले बिना उसने चुपचाप पैसे जेब में रख लिए।

दृष्टांत नंबर ५.

रैना को याद नहीं था कि वह अपना नेकलेस आशिता के घर भूल गई थी। आशिता ने उसे याद भी नहीं दिलाया और खुद ने ही वह नेकलेस रख लिया।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

मथुरा नगरी में धानासार नाम का एक व्यापारी रहता था। वह बहुत ही धनवान था और कंजूस भी उतना ही था। उसकी श्रीमंताई और लोभी वृत्ति के लिए वह प्रसिद्ध था। कोई उसका धन न ले जाए, इसलिए वह धन को जमीन में गाड़कर रखता था।

एक दिन की बात है। धानासार जमीन में गड़ा हुआ धन देखने गया। जमीन के अंदर का दृश्य देखकर वह चकित हो गया!! उसका सारा धन कोयले में रूपांतर हो गया था और कोयले के ऊपर साँप घूम रहे थे। उसके आघात की कोई सीमा न रही। वह इस आघात से बाहर निकल सके, उससे पहले उसे दूसरे खराब समाचार मिले। उसका सामान लानेवाले सभी जहाज समुद्र में डूब गए। और साथ ही उसके कीमती सामान के साथ आनेवाला काफिला रास्ते में ही लूट लिया गया। ऐसा दर्दनाक समाचार से धानासार बिल्कुल टूट गया। लेकिन धानासार टूटकर बैठा रहे, ऐसा नहीं था।

उसने उसके नसीब को ललकारा। उसने घर में बची हुई आखिरी दस हज़ार सोने की मोहरे लीं और वह व्यापार करने परदेश निकल पड़ा। लेकिन दुर्भाग्य उसका पीछा ही नहीं छोड़ रहा था।

उसके पाप कर्म के उदय के कारण उसका जहाज़ टूट गया और आखिरी बची हुई सोने की मोहरें भी गुम हो गईं। वह खुद एक लकड़ी के सहारे जैसे-तैसे किनारे पर पहुँचा।

दूसरे दिन, धानासार भूखा-प्यासा एक बगीचे में पहुँचा। वहाँ उसने एक आम के पेड़ के नीचे किसी मुनि को बैठे हुए देखा। मुनि धर्म बोध सुना रहे थे। वह भी सभा में जाकर बैठ गया। जब सभा पूरी हुई, तब वह मुनि के पास गया और उनके चरणों में गिरकर कहा, "मुनिश्री, मुझे समाधान चाहिए। मेरे किन कर्मों के कारण मुझे इतनी अधिक संपत्ति मिली और मेरे किन कर्मों के कारण यह सबकुछ चला गया?!"

मुनि ने धानासार को अपने पास बिठाया। और फिर उसके पिछले जन्म का वर्णन सुनाया।

"धातकी खंड नाम के देश में अंबिका नाम का एक शहर था। उस शहर में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई बहुत ही उदार और सेवाभावी थे। जब कि छोटा भाई बहुत ही कंजूस था। वह खुद तो कभी किसी को कुछ देता नहीं था, लेकिन बड़े भाई की उदारता पर भी उसे बहुत गुस्सा आता। पर इससे बड़े भाई की उदारता में कुछ फर्क नहीं पड़ता था। बड़े भाई जितना

ज्यादा देते जाते, उतनी ही उनकी संपत्ति कम होने के बदले बढ़ती जाती।

यह देखकर छोटे भाई को बड़े भाई के प्रति ईर्ष्या हुई। उसने कपट किया। राजा को उल्टा-सीधा बताकर बड़े भाई का सारा धन ज़ब्त करवा दिया। छोटे भाई के ऐसे षड़यंत्र से बड़े भाई को बहुत ही बड़ा आघात लगा और उस आघात से उनकी मृत्यु हो गई। पूरी ज़िंदगी के अच्छे कर्मों के कारण उन्होंने देवता बनकर देवलोक में जन्म पाया।

छोटे भाई के विचित्र स्वभाव के कारण परिवारवालों ने उसका साथ छोड़ दिया। वह अकेला पड़ गया। समय अनुसार जब उसका आयुष्य कर्म पूरा हुआ, तब उसने असुर कुमार की तरह नर्क में जन्म पाया।

वह छोटे भाई तुम हो। तुम्हारे पूर्व जन्म में तुम कभी भी दान देने में सहमत नहीं थे। इसलिए इस जन्म में भी तुम कंजूस ही हो। कपट करके तुमने अपने भाई की पूरी संपत्ति छीन ली। इसलिए आज तुम्हारा सारा धन चला गया है। तुम्हारे बड़े भाई ने देवलोक का आयुष्य पूरा करके, ताम्रलिप्ति नाम के शहर में जन्म लिया। वह बहुत ही सफल और धनवान व्यापारी बने। इस जन्म में भी उन्होंने अपना सारा धन दान में दे दिया, और साधु बन गए, जिनके साथ तुम अभी बात कर रहे हो।"

यह सुनकर धानासार को बहुत ही दुःख हुआ। वह मुनि के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगा। उसने प्रतिज्ञा ली कि अब से किसी भी पाप कर्म में वह कभी भागीदार नहीं बनेगा। अपनी कमाई का चौथा भाग अपने लिए रखकर बाकी का सारा भाग सत्कार्य में ही खर्च करेगा। मुनि धानासार को आशीर्वाद देकर वहाँ से चले गए।

और फिर धानासार के संजोग बदले। धीरे धीरे उसने खोई संपत्ति वापस पा ली और धानासार ने अपने वचन का पालन किया। वह अपना धन अच्छे कार्यो में खर्च करने लगा। उसके जीवन में अब मोड़ आ गया। उसके बाद का जीवन वह एक आदर्श, उदार और उच्च व्यक्ति की तरह जीकर लोक पूज्य बन गया।

चलो खेलें

१. दिए गए चित्र में कितने क्यूब छूपे हुए हैं, वह ढूँढें।

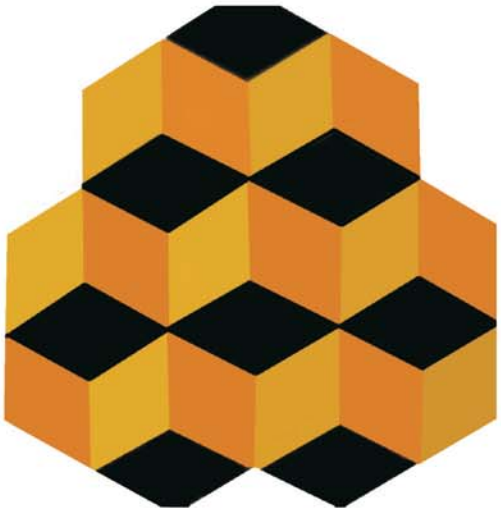

२. दी गई आड़ी और खड़ी चाबियों को नंबर अनुसार सेट करें।

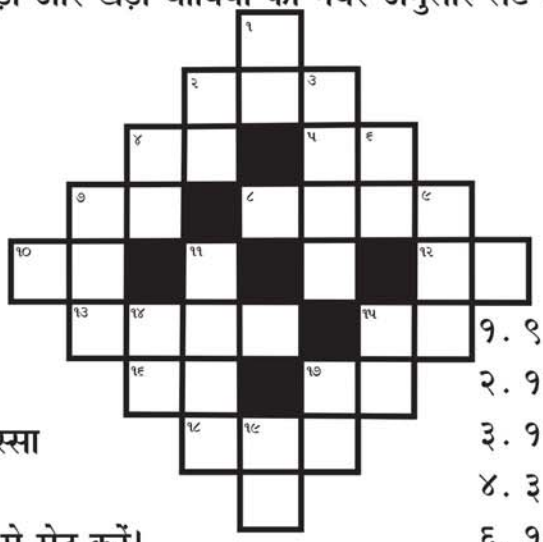

आड़ी चाबियाँ

२. ८ बार ३९
४. ४ बार १९
५. ६० का चौथा हिस्सा
७. ४ डज़न
८. १४७८ को फिर से सेट करें।
१०. ७ आड़ी चाबी + २ खड़ी चाबी
१२. ८० का पाँचवाँ हिस्सा
१३. ३ खड़ी चाबी का दुगना
१५. १५६ का तीसरा हिस्सा
१६. ४ खड़ी चाबी - ५ आड़ी चाबी
१७. १७२ का आधा
१८. ५ बार ४३

खड़ी चाबी

१. ९ बार ९
२. १४४ का चौथा हिस्सा
३. १२३४ को फिर से सेट करें
४. ३ बार १४ खड़ी चाबी
६. ११६ का आधा
७. १३३२ का तीसरा हिस्सा
९. १५ खड़ी चाबी का दुगना
११. ३००० + ४ बार ७०८
१४. १५ आड़ी चाबी का आधा
१५. ७ बार ८
१७. ५ बार १७
१९. ४ आड़ी चाबी का आधा हिस्सा

३. नीचे दिए गए विकल्पों में से ज़रूरी लिंक ढूँढ निकालें।

१.

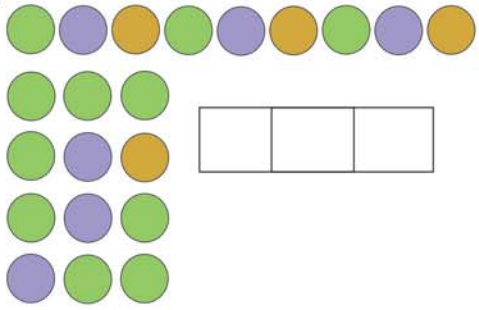

२.

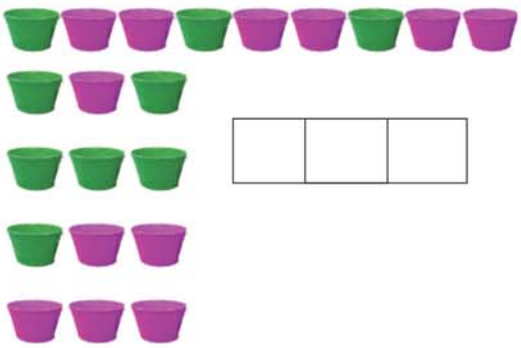

३.

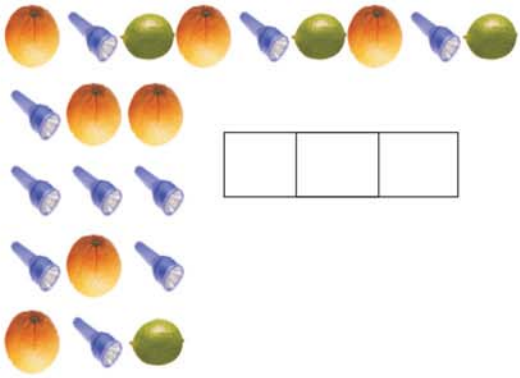

४.

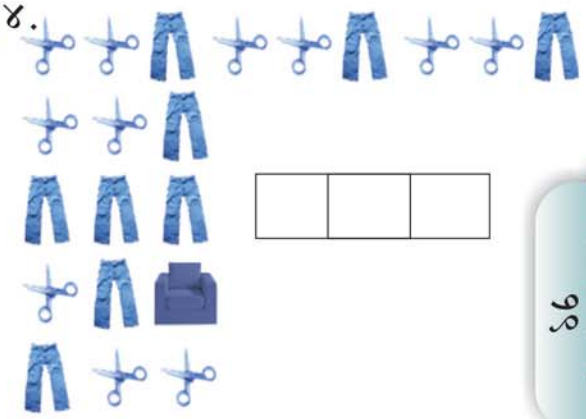

४. रास्ता ढूँढो।

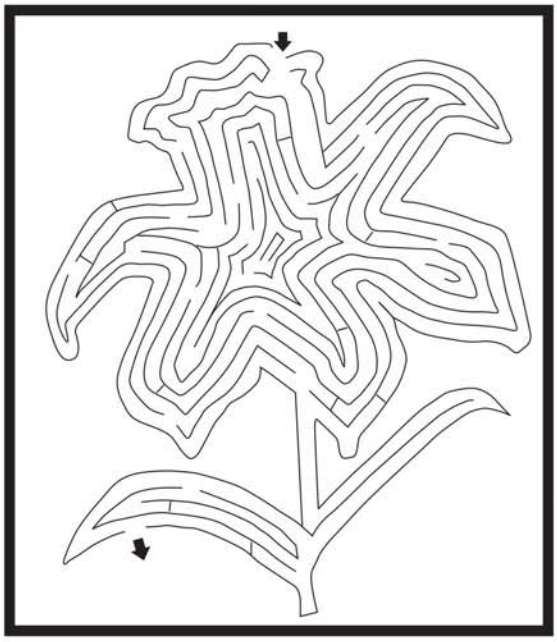

पज़ल के जवाब

१.

२.

३.

४.

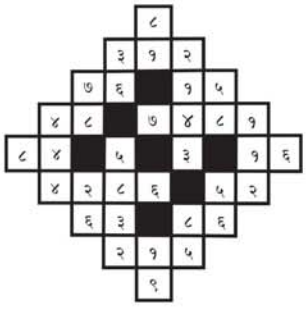

Akram Express

February 2014
Year : 1, Issue : 11
Conti. Issue No.:11

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

બારૌડા મેં પૂજ્યશ્રી કી નિશ્રા મેં મનાએ ગએ GNC Day કી ઝલક...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.